LIVE

NET JRF Solutionist

Daily Live 12:00 PM

FILLERFORM LIVE

NTA UGC NET 2022

हिंदी साहित्य(PAPER -2)

इकाई-5

(हिंदी कविता) भाग-1

पृथ्वीराज रासो

BY JYOTI MA'AM

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

इकाई – V

हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो – रेवा तट

अमीरखुसरो – खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक – डॉ. नरेन्द्र झा) – पद संख्या 1 - 25

कबीर – (सं.- हजारी प्रसाद द्विवेदी) – पद संख्या – 160 - 209

जायसी ग्रंथावली – (सं. राम चन्द्र शुक्ल) – नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार – (सं.- राम चन्द्र शुक्ल) – पद संख्या 21 से 70

तुलसीदास – रामचरितमानस, उत्तर काण्ड

बिहारी सतसई – (सं.- जगन्नाथ दास रत्नाकर) – दोहा संख्या 1 – 50

घनानन्द कवित्त – (सं.- विश्वनाथ मिश्र) – कवित्त संख्या 1 – 30

मीरा – (सं.- विश्वनाथ त्रिपाठी) – प्रारम्भ से 20 पद

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध – प्रियप्रवास

मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती, साकेत (नवम् सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – आंसू, कामायनी (श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)

निराला - जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु।

सुमित्रानंदन पंत – परिवर्तन, प्रथम रश्मि

महादेवी वर्मा – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी

नागार्जुन – कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ।

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय – कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार

भवानीप्रसाद मिश्र – गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल

मुक्तिबोध – भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में

धूमिल – नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद

8209837844

www.ugc-net.com

हिंदी कविता

पृथ्वीराज रासो

8209837844

www.ugc-net.com

पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो हिंदी साहित्य के प्रथम वृहत महाकाव्य और अमर कीर्ति स्तंभ है | जिसकी रचना चंद्रवरदाई ने की थी इनमें मुख्य रूप से दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान की कथा है यह ग्रंथ यद्यपि पृथ्वीराज के शौर्य एवं पराक्रम की गाथा है पर इसमें जातीय गौरव का भी काव्य माना जाता है|

8209837844 www.ugc-net.com

जनार्दन राय के अनुसार

"रामायण और महाभारत के बाद यदि किसी महाकाव्य में जाति के जीवन का प्रतिनिधित्व किया है तो वह पृथ्वीराज रासो है|"

1.रासो का इस मुख्य कथा के साथ-साथ बीच-बीच में कुछ अति मानवीय उपाख्यानो तथा होली दीपावली सँबंधित किवंदंतियों का भी समावेश किया गया है|

2. पृथ्वीराज रासो की कथा प्रधानता शुक और शुकी के संवादों के द्वारा बतलाई गई है|

8209837844 www.ugc-net.com

पृथ्वीराज रासो के रचयिता पृथ्वीराज रासो के रचयिता कवि के प्राय दो रूपों में दर्शन होते हैं |

१.पहला कथा नायक के मित्र के रूप में

२.दूसरा रचनाकार कवि के रूप मेंउसका उल्लेख इन नामों से मिलता है

8209837844 www.ugc-net.com

यथा –
चंद्र या कवि चंद्र और चंद्र बरदिया|
रासो में मित्र और कवि के रूप में
चंद्र का जो उल्लेख मिलता है |
वह इस प्रकार है
'चंद्र या कवि चंद,
चंद बिरछिया
भट्ट चंद या चंड़िय
चंड चन्द,
कवियन श्री और
राजकवि

8209837844
www.ugc-net.com

चन्द का इस प्रकार विभिन्न नामों से स्वयं की प्रकट करना इन बातों का घोतक है कि

1.रासो का रचयिता तथा कथा नायक पृथ्वीराज चौहान का मित्र चंद्रवरदाई रचना में एक ही व्यक्ति के रूप में आता है |

2. रासो के कवि के लिए चन्द या चन्द बिरदिया नाम आते है और कथा नायक कवि मित्र के लिए भी वही नाम आते हैं |

3. कथा नायक के कवि मित्र के कुछ और भी ना आते हैं जो कभी के नामों से मिलते हैं चंद्रबरदाई , चडिया, कवियन, श्री आदि|

8209837844

www.ugc-net.com

पृथ्वीराज रासो का रचनाकाल

1.सर्वप्रथम रासो का उल्लेख संवत 1707 में दलपति मिश्र रचित 'जसवंत उद्योग ' में मिलता है श्री मोहनलाल विष्णुलाल पांडेय ने 'गंग' कवि रचित जिस 'चंद छंद बरनन की महिमा' ग्रंथ के प्रति का पता दिया है और सिद्ध करना चाहा है कि संवत् 1627 तक पृथ्वीराज रासो का उल्लेख मिलता है|

2. किंतु 'मुनि जिनविजय' ने अपनी कृति पुरातन प्रबंध संग्रह (रचनाकाल संवत 1290)के आधार पर रासो को 1290 से पूर्व का माना है क्योंकि उन्होंने अपने ग्रंथ में रसों के कुछ छंद भी उद्धृत किए हैं |जो रसों के लघु संस्करण में मिल जाते हैं |

8209837844 www.ugc-net.com

3. अतः रासो निश्चत 'पुरातन प्रबंधन संग्रह ' नायक कृति पूर्व रचा जाँ चुका था |
4. कुछ विद्वानों रासो को 15वीं शती के आसपास की रचना सिद्ध करते हैं| प्रोफेसर रमाकांत त्रिपाठी ने इसका रचनाकार 1455 विक्रमी माना है | तो वही माता प्रसाद गुप्त ने इसकी रचना संवत 1400 के आसपास सिद्ध की है जो कि उचित ही है |

8209837844 www.ugc-net.com

5. क्योंकि यदि रासो के मूल पाठ और प्रबंधन लेखन के आधारभूत पाठ के बीच 511 वर्ष समय तथा शेष प्रत्येक पीढ़ी के लिए 25 वर्षों का समय रखें तो रासो का पाठ 1400 के लगभग जा पहुंचा है|

6. इस प्रकार सभी दृष्टियों से विचार करने पर पृथ्वीराज रासो की रचना संवाद 1400 के लगभग हुई ही मानी जा सकती है इससे पूर्व नहीं है|

8209837844 www.ugc-net.com

पृथ्वीराज रासो का महाकाव्यत्व

1. **सर्गबध्दता** :- पृथ्वीराज रासो एक शब्द रचना है जिसमें 69 सर्ग है| रासो में सर्गो अथवा अध्यायों के स्थान पर 'समय' या 'प्रस्ताव' का व्यवहार हुआ है सर्गबध्दता की दृष्टि से 'रासो' एक सफल महाकाव्य है|

2. **ऐतिहासिक एवं लोक प्रसिद्ध कथानक:-** पृथ्वीराज रासो का कथानक मूलक इतिहास प्रसिद्ध रहा है किंतु कहीं-कहीं कल्पना का समावेश भी किया गया है इसका नायक पृथ्वीराज चौहान एक ऐतिहासिक पात्र है कवि ने कल्पना के बल पर कुछ काल्पनिक प्रसंग भी इस में जुड़े हैं तथापि इस में ऐतिहासिक पर पूरी तरह प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता काल्पनिक घटनाओं के बीच में इतिहास भी सुरक्षित है |

8209837844 www.ugc-net.com

3. धीरोदात्त नायक:- पृथ्वीराज रासो का नायक पृथ्वीराज चौहान है जो धीरोदात्त गुणों से संपन्न उच्च कुलोत्पन्न क्षत्रिय है| किसी महान आदर्श के लिए जीवन के सुखों का त्याग ही चरित्र में उदात्तता लाता है पृथ्वीराज के चरित्र में यह बात देखी जा सकती है अपने शत्रु शाहबुद्दीन के परास्त कर उसमें उसे एक से अधिक बार अपनी उदारता से मुक्त कर दिया वीर, पराक्रमी, साहसी, दयालु, उदार तथा कठिनाइयों के नायक है|

8209837844 www.ugc-net.com

4. रस निर्वाह :- पृथ्वीराज रासो एक वीर रस प्रधान ग्रंथ है| यद्यपि इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है किंतु वीर रस अंगी रस बनकर उभरा है जबकि श्रृंगार, भयानक, वीभत्स आदि रस सूक्ष्म रूप से उपस्थित हुए हैं| इन अन्य रसों के सहयोग से ही वीर रस की परिपष्टि हुई है और उत्साह का जैसा पूर्व और परिष्कृत चित्र इस रचना में उपस्थित किया गया है वह अन्यत्र दिखाई नहीं पड़ता | अतः रस निर्वाह की दृष्टि से 'पृथ्वीराज रासो ' एक सफल महाकाव्य है|

8209837844 www.ugc-net.com

5.चतुर्वर्ग में से एक फल की प्राप्ति:- महाकाव्य में धर्म, अर्थ ,काम ,मोक्ष चतुर्वेग ने से कोई एक फल की प्राप्ति होना आवश्यक है| फल प्राप्ति की दृष्टि से देखा जाए तो रासो का उद्देश्य धर्म और मोक्ष प्राप्त रहा है| धर्म और जीवन उत्सर्ग के लिए नायक युद्धों में कूद पड़ा है| अंत में चंद की युक्तियां से अधर्मी शत्रु का संहार कर वह धरती को वीर वधू के सामने उत्फुल्ल करने में भी सफल होते हैं रासो के अंत में धर्म, अर्थ ,काम, मोक्ष का संकेत भी मिलता है इस प्रकार स्पष्ट है कि रासो की रचना एक का उद्देश्य धर्म और मोक्ष की प्राप्ति रहा है और उसको संपन्न करने में कवि का पर्याप्त सफलता मिली है|

8209837844 www.ugc-net.com

6. वर्गों में छंदबध्दता :- रासो एक छंदबध्द ग्रंथ है रासो के प्रत्येक सर्ग में एक नहीं बल्कि वर्णनात्मक अनेक छंदों का प्रयोग किया गया है यथा - युद्ध वर्णनो, में जहां छप्पय, कुंडलियां, पध्दरि, नाराच, बिज्जु, माली आदि छंदों का प्रयोग किया है वही श्रृंगार अथवा सौंदर्य वर्णन में दोहा" उक्ति" आदि छंदों का प्रयोग हुआ है रासों के प्रत्येक सर्ग में एक से अधिक छंदों का वर्णन मिलता है जिसे देखकर रसों का "शब्दों का म्यूजियम" कहा जा सकता है|

8209837844 www.ugc-net.com

7. शैलीगत विशेषताएं:- रासो के प्रारंभ में रासोंकार ने क्रमश ओंकार की, गुरुदेव की, विष्णु की छंदों में स्मृति का है| अंत में वरदानी स्वामी ब्रह्मा को भी नमस्कार किया गया है अतः यदि समाप्ति रूप से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि पृथ्वीराज रासो में यहां काव्य के प्रत्येक लक्षणों का निर्वाह किया गया है|

8209837844 www.ugc-net.com

पृथ्वीराज रासो का काव्य सौंदर्य

इसको निम्नलिखित शीषकों में देखा जा सकता है|

1.भावपक्षीय सौंदर्य :- रासो का भावपक्ष विस्तृत है इसमें वर्णन विस्तार से साथ-साथ भावों एवं रासो का सुंदर परिपतक किया है | रासो के भावपक्षीय सौंदर्य का विवेचन निम्नलिखित शीषकों में किया जा सकता है |

१. वस्तु वर्णन
२. नंख शिख वर्णन
३. रूप और सौंदर्य वर्णन
४. प्रकृति वर्णन
५. भाव एवं रस निरूपण

8209837844 www.ugc-net.com

2. कलापक्षीय सौन्दर्य

रासो कला की दृष्टि से भी एक उत्कृष्ट रचना है रासो के कला पक्ष में डा० गोविंद राम शर्मा की मान्यता है :- " सशक्त तथा भावपूर्ण भाषा ,अलंकारों की स्वाभाविक योजना द्वारा ,"रासो " का काव्य- शैली में अधिक मनोरंजन एंव शालीनता आ गई है विषयनुसार चन्द की काव्य शैली की अपना रूप बदलती हुई दिखाई देती है वीर रस के प्रसंग में ओजपूर्ण और श्रृंगार के प्रसंग में माधुर्य गुण को अपनाते हुए यह पाठक की हृदय को अपनायास ही अपनी और आकृष्ट कर लेती है| “

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com